Code no: 53

विषय : सागर में लहरें क्यों उमड़ रही हैं ?

इंतज़ार....

हर जवाकुसुम जैसी अजीबोगरीब में,
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर,
बैठे रहते थे माँ और मैं उसे इंतज़ार करकर.....
सूरज फूटने से पहले ही वह शेज़-
निकलता था अपने दिल हौसलों के साथ....
हमारे लिए अन्न कमाने के लिए!
लेकिन एक दिन न आया वह....

मैं और माँ इंतज़ार करती रहती उसे.....
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

कितने तरह की मछलियाँ वह पकड़ती थी?
कुछ मेरी तरह छोटा-नन्हा था, तो-
कुछ मुझसे बहुत गुना ज्यादा मोटा होगे!
कुछ रंग-बिरंगे है तो,
कुछ देखने में ही सुंदर लगते थे!

मैं और माँ इंतज़ार करती रहती उसे....
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

माँ से पूछा मैं....
"बापू क्यों नहीं आए अभी तक?.."
बापू ने मुझे बचपन से ही
पेट भर खाना खिलाते थे.....
कई कई मीठी कहानियाँ
सुनकर मुझे खुश बनाता रहता था...

Code no: 53.

प्यारी-प्यारी लोरी सुनाकर
मेरी नींद कुदरत बनाती थी....

मैं और माँ इंतज़ार करते रहते उसे.....
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

बापू की उँगली पकड़कर
मैंने स्कूल में पहली कदम बढ़ाया!
मेरा पहला अध्यापक
वह ही था!
सगुण, त्याग और परोपकार के पाठ-
पहले ही सिखाया था वह मुझे.....

मैं और माँ इंतज़ार करते रहते उसे...
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

मैंने माँ से पूछा-
"माँ, सागर में लहरें क्यों उमड़ रही हैं-
इतनी ज़ोर से?"
माँ ने जवाब दिया कि
वह सिर्फ हवा की नटखट है.....
लेकिन सच्च में हर एक लहरों के कठोर आवाज़-
मेरे कानों को घायल बनती रहती थी....
सच्च में अपने आँखों के डर
मुझसे छिपाना चाहती थी माँ!

मैं और माँ इंतज़ार करते रहते उसे....
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

Code no: 53.

प्यारी-प्यारी लोरी सुनाकर
मेरी नींद कुदरत बनाती थी....

मैं और माँ इंतज़ार करते रहते उसे.....
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

बापू की ऊँगली पकड़कर
मैंने स्कूल में पहली कदम बढ़ाया!
मेरा पहला अध्यापक
वह ही था!
सगुण, त्याग और परोपकार के पाठ-
पहले ही सिखाया था वह मुझे.....

मैं और माँ इंतज़ार करते रहते इसे...
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

मैंने माँ से पूछा-
"माँ, सागर में लहरें क्यों उमड़ रही हैं-
इतनी ज़ोर से?"
माँ ने जवाब दिया कि
वह सिर्फ हवा की नटखट है.....
लेकिन सच्च में हर एक लहरों के कठोर आवाज़-
मेरे कानों को घायल बनती रहती थी....
सच्च में अपने आँखों के डर
मुझसे छिपाना चाहती थी माँ!

मैं और माँ इंतज़ार करते रहते इसे....
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

Code no: 53

उसके दोस्तों सबके नाव आगाम थे....
लेकिन सिर्फ उसका नहीं....
हमें रेत में बैठकर
लगातार किया इसारा इंतजार....
रवि सागर में ज्यादा पहले ही डूब गया था..!
दरअसल उस अस्तमय के साथ,
हमारे सपनों का भी अस्तमय हो चुकी थी..!
बापू न आया फिर...

मैं और माँ इंतजार करते रहते उसे....
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

मेरे हर सपनों में एक सूरज-
के तरह चमकता था वह!
बडे होकर उसके तरह जैसा
त्यागमूर्ती बनने की मंजिल था मुझे!
हाँ मुझे अभिमान है कि,
मेरा बाप भी एक मछुआरा था!

मैं और माँ इंतजार करते रहते उसे....
उस समुंदर की असीमता पर आँखें डालकर!

अपने जिंदगी को बलिहार कर,
हजारों के जीवन को बचाकर
बाढ को पराजित कर,
हर जवानों के साथ
हर एक भारतीय याद करते,
एक इनसान है वह....
एक 'शहीद' है वह!!....